

AK. 1, 2, 3, 8. H. 1079. — c) *unterhalb befindlich, nach unten gerichtet* (Gegens. ऊर्ध्वः) सत्येनोर्ध्वस्तपति ब्रह्मणावाङ्मि पश्यति । प्राणेन तिर्यङ्ग-
पति AV. 10, 8, 19. यस्योर्ध्वा दिवं तन्वस्त्वर्त्यर्वाङ्मि पतिः पतिर्वि भाति
13, 3, 16. (लोकान्) इत्योर्ध्वानमुतश्चावाचः ÇAT. Br. 8, 7, 3, 13. 3, 4, 7. 9, 1,
1, 34. ये चैतस्मादवाचो लोकाः KHAND. Up. 1, 7, 6. — 2) अर्वाक् indecl.
gaṇa स्वरादि. adv. praep. a) *herwärts* (Gegens. पराक्, परस्, परस्तात्) : ये
नार्वाङ् पश्यन्ति RV. 10, 71, 9. नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि देवः 10, 89, 5. भूयं
परस्तादभ्यं ते अर्वाक् AV. 8, 1, 10. पराक्ते ज्योतिरपयं ते अर्वाक् 10, 1, 16.
अर्वाक्ता परेभ्यो ऽविदं परो ऽवरेभ्यः VS. 3, 42. स चोदय चित्रमर्वाग्राधः
RV. 1, 9, 5. अर्वाक्यथ ऊर्ध्वयः कृणुधम् 7, 39, 3. उक्थेभिर्वाग्वसे पुत्रव-
सू अर्कश्च नि ह्येयामेह 1, 47, 10. 92, 16. 108, 4. 118, 2. 5, 43, 5. 7, 27, 3.
AV. 4, 23, 6. ÇAT. Br. 1, 4, 2, 4. 5, 1, 10. 9, 1, 2, 30. — b) *diesseits, von — aus,*
von — an, vor oder nach (je nachdem von etwas Bevorstehendem oder
Vorangegangenen die Rede geht) ĀK. 3, 5, 16. H. 1342. mit dem abl. :
ततो ह्येदवाक्काशेया ऽग्नीनादधते ÇAT. Br. 13, 5, 4, 19. अर्वागेव मदिरं सर्वं
स्यात् 4, 5, 3, 2. 5, 4, 1, 8. 2, 5, 6, 3, 3, 7. यस्मादवाकसंवत्सरो ऽहोभिः परि-
वर्तते 14, 7, 2, 20 = BRH. ĀR. Up. 4, 4, 16. अर्वागतिरात्रेभ्यः ĀÇV. ÇA. 9,
1. लुशादवाक् vor Luca d. i. in den vorhergehenden Theilen des Buches
RV. Prāt. 1, 31. एकोनविंशतित्रिंशदित्यादयः शतादवाकस्त्रीलिङ्गाः H.
872, Sch. दशाहं शावमशौचं सपिण्डेषु विधीयते । अर्वाकसंचयनादस्याम्
M. 5, 59. अर्वाङ्गवद्वहरेत्स्वामी परेण नृपतिर्हरेत् 8, 30. अर्वाकसपिण्डी-
करणं यस्य संवत्सराद्वेत् (Str.: nach) Jāg. 1, 254. अर्वाकसंवत्सरात्स्वामी
हरेत् परतो नृपः (Str.: bis nach) 2, 173. अर्वाङ्गतुद्शादङ्गा यस्य नो राजै-
विकम् । व्यसनं जायते घोरम् 113. Mir. in Z. d. d. m. G. 7, 340, N. 3. व-
र्षात्षोडशादवाक् H. 1342, Sch. mit dem instr. : अर्वाग्देवा अयं विमर्जनेन
RV. 10, 129, 6. एना पर एकेन दूषणं चिदवाक् AV. 5, 11, 6. bildet mit ein-
nem nom. ord. ein comp. : अर्वागिवशेषु (dem 20sten vorangehend) वर्षेषु
ÇAT. Br. 10, 2, 3, 8. अर्वाक्यज्ञाशेषकस्म 11, 5, 3, 6. Gegens. परस्. — c) *unter-*
halb : स यावदादित्य उत्तरत उदेता दक्षिणतो ऽस्तेमता द्विस्तावद्धर्मुदे-
तार्वागस्तमेता KHAND. Up. 3, 10, 4. — d) *innerhalb, vor einem loc.* : एते
चार्वागुपवनभूवि (innerhalb oder in der Nähe) — नष्टातङ्कं हरिणशिशवा
मन्दमन्दं चरन्ति v. l. ad ÇĀK. 14.

अर्वावत् (von अर्वा) f. Nähe (Gegens. परावत्) : यदेत्तरा परावर्तमर्वावत्
च हूयसे RV. 3, 40, 9. अर्वावतो न आ गच्छि परावतेश्च वृत्रहन् 3, 40, 3. 37,
11. 8, 71, 1. 9, 39, 5. यच्छक्रासि परावति यदेवावति 8, 13, 15. ये परावति
सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः VALAKH. 3, 3. RV. 5, 73, 1. 8, 33, 10. 9,
63, 22.

अर्वावसु (अर्वा + वसु) N. des Hotar der Götter nach ÇAT. Br. 1, 5, 1,
24. ihres Brahman nach KAUSH. Up. in Ind. St. 2, 306. — Vgl. अर्वागवसु.

अर्वाक m. N. pr. अर्वाकाश्चैव राजानश्च MBH. 2, 1119. LIA. I, 566, N. 1.

अर्श (अर्श) s. रिश.

अर्श 1) m. Verletzung (von अर्श), s. अनर्शरति. — 2) n. Hämorrhoiden
ÇABDAR. im ÇKDR. Vgl. अर्शस्.

अर्शनि von अर्श, s. अनर्शनि.

अर्शस् (von अर्श = 2. अर्श) n. Hämorrhoiden, pl. Hämorrhoidalknoten
Up. 4, 197. AK. 2, 6, 2, 5. H. 468. नाशयित्री ब्रह्मास्यार्शसि उपचितामसि
VS. 12, 97. Suçr. 1, 238. fgg. 2, 46. fgg. Verz. d. B. H. No. 941. u. s. w.
अर्शेतिगुप्त AK. 2, 6, 2, 10.

अर्शस् (von अर्शस्) adj. an Hämorrhoiden leidend P. 5, 2, 127. Vor. 7,

32, 33. AK. 2, 6, 2, 10. H. 461. M. 3, 7.

अर्शसानं 1) adj. zu schaden suchend, boshast: न्यर्शसानमेषति RV. 1,
130, 8. 8, 12, 9. अर्धं प्रियमर्शसानस्य साक्षां क्षिरो भरद्वासस्य 2, 20, 6. आ
साविषदर्शसानाय शरुम् 10, 99, 7. Entweder von अर्श oder 2. अर्श — 2)
m. Feuer Up. 2, 85.

अर्शिन (von अर्श 2.) adj. mit Hämorrhoiden behaftet ÇABDAR. im ÇKDR.

अर्शोघ्न (अर्शस् + घ्न) adj. Hämorrhoiden vertreibend Suçr. 1, 194, 8. 2,
48, 11. Diese Bezeichnung führen als Specifica: 1) m. Amorphophallus
campanulatus Blume (s. कन्द) AK. 2, 4, 5, 22. H. 1189. MED. n. 32. —
2) m. ein Theil Buttermilch mit drei Theilen Wasser H. c. 99. — 3) f.
○घ्नी Curculigo orchoides Lin. (तालमूली) MED. n. 32.

अर्शोयुज् (अर्शस् + युज्) adj. mit Hämorrhoiden behaftet H. 461.

अर्शाकृत (अर्शस् + कृत) m. (gut gegen die Hämorrhoiden) Semecar-
pus Anacardium Lin. (s. भक्ष्यातकी) TRIK. 2, 4, 13.

1. अर्श (अर्श), अर्शति, आनर्श. 1) *fließen, gleiten, schiessen* (von Flüs-
sigkeiten); *Etwas (acc.) herbeiströmen*: अर्शन्नापस्तयेह प्रमृताः RV. 3,
30, 9. अर्षादेह प्रमवः सर्गित्तः 33, 11. तस्मा अर्षो घृतमर्षति सिन्धवः 1,
123, 5. मूली न धारात्यन्यो अर्षति 9, 86, 44. 1, 103, 12. 4, 18, 6. 58, 5, 6.
9, 2, 4. 28, 6. 61, 15. 86, 11. 101, 7. 107, 4 und oft, besonders vom Soma.
— 2) *gleitend —, rasch sich bewegen*: शश आस्कन्दमर्षति VS. 23, 55.
56. परेणावायुर्षतु AV. 4, 3, 2. (रथः) स्याणामर्षद्वार्षत् 10, 4, 1. नैन्देवा
आम्रवन्पूर्वमर्षत् (partic.) ĪÇOP. 4. — Verwandt mit वर्ष.

— अर्भि 1) *herbeiflüssen, herbeieilen*, mit dem acc. des Ziels: अर्भि त्वा
सिन्धो शिप्रमिन्नु मातेरो वाश्चा अर्षति पयसेव धेनवः RV. 10, 73, 4. अर्भ्यर्षत
सुष्टुतिम् 4, 58, 10. 9, 62, 3. 23. NAR. 2, 11. — 2) *herbeiströmen* (trans.): अ-
र्भि वाजर्मर्ष (vgl. NAIKH. 3, 21) RV. 9, 87, 6. अर्भि नो अर्ष दिव्या वसूनि 97,
51. 62, 19. 64, 8. 107, 21. अर्जान्क् वै पृश्नीस्तपस्यमानान्ब्रह्म स्वयेभ्यः
नर्षत अर्षयो ऽभवन् तदधीणामृषितम् TAHT. ĀR. 2, 9.

— परि *umfließen*: परि गव्युनो अर्ष परि सोम सित्तः RV. 9, 97, 15.
10, 4. 52, 1. (सोमः) परि कोशमर्षति शुक्रा वसोने अर्षति 1, 133, 2.

— प्र *hervorströmen*: प्र णो इन्द्रो मूके तेन उर्मि न बिधेर्षसि RV. 9,
44, 1. 9, 2. 20, 1.

— वि *durchströmen*: वि वारमव्यमर्षति RV. 9, 61, 17.

— सम् *zusammenkommen, sich mit Jmd zusammenthun*: मर्ष इव यु-
वतिभिः समर्षति RV. 9, 86, 16. 34, 6. उभावतौ समर्षति AV. 13, 2, 13.

2. अर्श (अर्श), अर्षति, अर्षम् *stossen, stechen*: प्रङ्गाभ्यो रत्नं अर्षति AV.
9, 4, 17. अर्श, अर्षति gehen (गति) Dhātup. 28, 7. — Vgl. अर्ष्टि Speer.

— उद् *aufspießen*: अर्शायं ब्रह्मणस्पति तीक्ष्णपृङ्गादृषन्ति RV. 10,
133, 2.

— उप *anspiessen, anstechen, stacheln*: (अर्षणीः) या हृदमुपर्षति AV.
9, 8, 14. 15. 16. अथ दक्षिणापुग्यमुपार्षति (sic) ÇAT. Br. 5, 4, 3, 8.

— नि 1) *niederdrücken, unterdrücken, verstecken, bedecken*: गुहाक-
रिन्द्रं माता वीर्येण न्यष्टम् RV. 4, 18, 5. अयं निधिः सर्गे अर्द्धबुधो गोभि-
रश्नेभिर्वसुभिर्न्यष्टः 10, 108, 7. हृदं न हि त्वा न्युपत्यमयो ब्रह्मणीन्द्र तव
यानि वर्धना 1, 52, 7. — 2) *hineinstopfen*: यडुदर्यस्य मेदसः परिशिष्यते
तदुदे न्युषेत् ÇAT. Br. 3, 8, 4, 5. 6, 6, 2, 9.

— परि *stützend umfassen*: उभयतः पर्यपति धृत्या अप्रवृत्ताय AIT. Br.